International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
International Open Access Journal
ISSN No: 2456 - 6470 | www.ijtsrd.com | Volume - 1 | Issue – 5

# स्वप्न समीक्षा

**डॉ. मोहन मिश्र**

युनिवर्सिटी प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, ति०माँ०भा० विश्वविद्यालय, भागलपुर

विश्वप्राणियों की चार अवस्थाओं में जागृत के बाद स्वप्न का ही स्थान सर्वसम्मत है। जाग्रत और निद्रा की मध्यवर्ती स्थिति में स्वप्न दिखते हैं। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि भूतकाल की घटनाएँ और जागृत अवस्था के अनुभव – दोनों मिलकर स्वप्नों की चित्रकला का सृजन करते हैं। उनका कहना है – 'जागृत मस्तिष्क तो अपनी संवेदनाओं को ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों की सहायता से चरितार्थ कर लेता है, पर अचेतन मन की अपनी आकांक्षाएँ एवम् अनुभूतियाँ स्वप्नों के माध्यम से ही साकार करने और अपने द्वारा रचे हुए उस स्वप्न–दर्पण में अपना मुँह देखकर सन्तोष करने का अवसर मिलता है।'

स्वप्न हमारी अन्तःचेतना और प्रकटचेतना का पारस्परिक सम्भाषण है, जो साङ्केतिक भाषा में रहस्यमय लिपि में सम्पन्न किया जाता है।

जिस प्रकार दर्पण के सहारे हम अपना चेहरा देख सकते हैं, उसी प्रकार स्वप्नों के आधार शरीर और मन की भीतरी परत किस स्थिति में है, उसकी झाँकी कर सकते हैं।

डॉ० 'कत्सफिन' का कहना है कि मस्तिष्क में ऐसी अद्भुत शक्ति है कि वह शरीर में भीतर–ही–भीतर चल रही रुग्ण गतिविधियों को पहले से ही जान लेता है और स्वप्नों के आधार पर यह सङ्केत देता है कि स्वास्थ्य की स्थिति इन दिनों कैसी चल रही है और उसका मोड़ किधर जा रहा है। वे कहते हैं – स्वप्न का न आना अस्वस्थता की निशानी है। जब शरीर की नाड़ियाँ अपनी अन्तःप्रक्रिया की बारीक रिपोर्ट मस्तिष्क को देना बन्द कर देती है तभी सपने दीखना बन्द हो जाता है।[1]

प्राचीन मनीषियों का मत था कि नींद में हमारी आत्मा इधर–उधर घूमती है, उस समय वह जो भी अनुभव करती है, वही स्वप्न है। इस विचार को मानते हुए अभी भी कुछ लोग सोये हुए व्यक्ति को एकाएक नहीं जगाते। उनका विश्वास है कि स्वप्नावस्था की भ्रमित आत्मा आकस्मिक जागरण से स्थूल शरीर में पुनः प्रविष्ट नहीं भी हो सकती है। फलतः व्यक्ति की मृत्यु हो जायेगी।

आधुनिक विदेशी मनोवैज्ञानिकों में 'फ्रायड', 'युंग' और 'एडलर' महोदयों ने अपने–अपने ढंग से स्वप्नों का विश्लेषण किया है। एक ने अतीत की दमित कामेच्छाओं की पूर्ति को, 'युंग' ने भावी और वर्त्तमान की अनुभूतियों को और 'एडलर' ने व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान को स्वप्न की सञ्ज्ञा दी है।

आकर ग्रन्थः सामवेद की कण्वशाखा के पुण्यकाण्ड में,[2] प्रश्नोपनिषद् के चतुर्थ प्रश्न में,[3] वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड में[4] एवम् मत्स्य[5] तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण[6] के शुभाशुभ स्वप्नों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

स्वप्न हेतुः वायु, पित्त और कफ–प्रकोप, मल–मूत्र के वेग से पीड़ित, भयाकुल, नग्न और मुक्त केश, शयन, चिन्ता तथा रोग – इनके कारण स्वप्न दिखाई देता है।

दिन को मन में जो कुछ देखा और समझा गया है, वह और अचिन्तित भी स्वप्नगोचर होते हैं।[7]

फलावधिः वैसे तो पाँच भौतिक शरीर और इसके साङ्केतिक नाम के समान प्रातःकाल के स्वप्न को मिथ्या कहा गया है। परन्तु फल–काल के निर्णय में रात्रि के प्रथम प्रहर के स्वप्न को एक वर्ष के बाद, चौथे प्रहर के लिए एक पक्ष में, अरुणोदय वेला में स्वप्न को दस दिनों में और प्रातःकाल के स्वप्न को तत्काल फलद होना वर्णित है।[8]

स्वप्न के बाद पुनः सो जाने अथवा रात में ही किसी से व्यक्त कर देने पर स्वप्न का फल नहीं मिलता है।[9]

'मत्स्यपुराण' के अनुसार दूसरे पहर का स्वप्न छह महीनों में, चौथे का एक मास में फलद होता है।[10] एक ही रात में शुभाशुभ स्वप्न होने पर पीछे देखे गये स्वप्न का ही फल प्राप्त होता है।[11] इसी से शुभ स्वप्न के बाद लोग जगे रह जाते हैं।

स्वप्न कथन : सुस्वप्न से गङ्गा–स्नान का फल प्राप्त होता है। धन, भार्या, भूमि, मोक्ष, ऐश्वर्य और अभीप्सित वस्तुएँ मिलती हैं। स्वप्न के अप्रकाशमान से चतुर्गुण फल मिलते हैं। अथवा देवालय में, देवता के समीप, पीपल और तुलसी वृक्ष के निकट विद्वान् से स्वप्न प्रकाशन करने पर द्विगुण फल मिलते हैं परन्तु काश्यपगोत्रीय से कहने पर विपत्ति, दरिद्र से दारिद्रय, नीच से व्याधि, शत्रु से भय, मूर्ख से कलह और स्त्री से कहने पर धन–हानि होने का उल्लेख है।[12]

स्वप्न फल : ऊपर वर्णित है कि स्वप्न प्रतीकात्मक होता है। जिनमें सत्त्व, रज, तमोगुणों के प्रतीकों के दर्शन क्रमशः उत्तम, मध्यम और अधम फलदायक हुआ करते हैं। वाल्मीकि रामायण में भी हाथी दाँत (श्वेत) की बनी, हंसों से जूती, आकाशचारिणी पालकी में श्वेतवस्त्र और माला पहने हुए राम–लक्ष्मण तथा श्वेत साड़ी पहने, श्वेत पर्वत पर बैठी सीता एवं शङ्ख–ध्वनि, श्वेत–छत्र, सूर्य–चन्द्रमा आदि (सत्त्वगुण प्रतीक) शुभ स्वप्न क्रम में दिखाये गये हैं।[13]

एवं दुःस्वप्नों में रजोगुण और तमोगुणों के प्रतीक तैल, रक्त एवं काला वस्त्र, लाल माला, रक्त चन्दन, काली नारी आदि का दर्शन अशुभ फलसूचक है।[14]

ब्रह्मवैवर्तपुराण में कफ, पित्त और वायु के प्राकोपों को स्वप्न का आधार मानते हुए भी स्वप्न के शुभाशुभ वर्णन क्रम में गुण प्रतीकों को ही मान्यता मिलती है। उसका स्पष्ट आदेश है कि भस्म, रुई और हड्डी के अतिरिक्त सभी श्वेत वस्तुएँ शुभ–सूचक हैं और कृष्ण गौ, हाथी, घोड़े, ब्राह्मण तथा देवता को छोड़कर शेष सभी वस्तुएँ अत्यन्त निन्दित हैं।[15]

नीचे ब्रह्मवैवर्तीय शुभाशुभ स्वप्नों का उल्लेख किया जा रहा है। ये सभी प्रतीकात्मक ही हैं –

**शुभ स्वप्न :**

1. धनप्रद स्वप्न – गौ, हाथी, महल, पर्वत और वृक्षों पर चढ़ना, भोजन करना और रोना, शस्त्रास्त्रों से विद्ध होना, व्रण, कृमि, विष्ठा तथा रुधिरलिप्त शरीर, हाथी, घोडा, बैल, चन्द्र, दीपक, अन्न, फल, पुष्प, कन्या, छत्र, रथ और ध्वजा, पूर्णकलश, ब्राह्मण, अग्नि, ताम्बूल, मन्दिर, श्वेतधान्य, नट और वेश्या, गो–दुग्ध और घृत, पादुका, खड्ग–प्राप्ति, फलवान् वृक्ष, शृङ्गी पशु और वानर से कष्ट, मत्स्य, मांस, मोती, शङ्ख, चन्दन (श्रीखण्ड), हीरा, पुत्र, शोभित, श्रीफल, आम, आंवला, धात्री, कमल, देवता, गौ, तपस्वी और पितर द्वारा दी गयी वस्तु–प्राप्ति, ब्राह्मण से पुष्प–प्राप्ति, तीर्थ, अट्टालिका, दिव्या स्त्री का पुरीषोत्सर्ग, पताका, हल्दी, ईख, सिद्धान्न, ब्राह्मण द्वारा कन्यादान, श्वेत सर्प, श्वेत पर्वत, नद, नदी और समुद्र, गुरु, देवालय, सिंह, बाघ, वीणावादन और सर्प का डंसना।[16]
2. राजा होने का स्वप्न – कमल के पत्ते पर खीर, दहि, दूध, मधु और मिष्ठान्न भोजन, हाथी का सूंड द्वारा मस्तक पर बिठाना, ब्राह्मण या ब्राह्मणी के द्वारा मस्तक पर छत्र अथवा श्वेत धान्य दिया जाना, अपने को श्वेतमाला तथा चन्दन से अलङ्कृत रथारूढ़ हो दही या पायस भोजन करते देखना, ब्राह्मण या ब्राह्मणी द्वारा अमृत, दही तथा प्रशस्त वस्त्र–प्राप्ति, ब्राह्मण से भूमिदान पाना, ब्राह्मण द्वारा कन्यादान दिव्यासती द्वारा वरण।
3. भूमि लाभ – अकस्मात् गौ प्राप्ति।
4. भार्या प्राप्ति – अगम्या स्त्री के साथ समागम, घोड़ी, मुर्गी और क्रौञ्ची (पक्षी) का दर्शन, अकस्मात् गौ का लाभ।
5. पुत्र लाभ – निगड–बद्धता, ब्राह्मण या ब्राह्मणी द्वारा सन्तुष्ट होकर फलदान मिलना, पूर्ण कलश प्राप्ति।
6. व्याधि मुक्ति (नीरोग होना) – सूर्य और चन्द्रमा का दर्शन, अपने को रोगी देखना।
7. शुभ समाचार प्राप्ति – मूत्र से सिक्त होना, वीर्य–पान, नरक में प्रवेश और अमृतपान, पक्षी और मनुष्य–मांस भक्षण।
8. प्रतिष्ठा प्राप्ति – जोंक, बिच्छू और साँप का दर्शन, सन्तुष्ट ब्राह्मण का घर में आना, कोकिला, स्फटिक का दर्शन, इन्द्रधनुष एवं वज्र की प्राप्ति।
9. कीर्ति लाभ – छत्र और ध्वजा का दर्शन।
10. प्रधानता प्राप्ति – खेल–खेल में तैर जाना।
11. विजय – प्रतिमा और शिवलिङ्ग का दर्शन, ब्राह्मण से पुष्प–प्राप्ति।
12. चिरञ्जीवी होना – ब्राह्मण को रथ पर बिठाकर नाना प्रकार के स्वर्ग को दिखाना, अपनी मृत्यु देखना।
13. कल्याण प्राप्ति – पीत वस्त्र, पीतमाल्य और चन्दनलिप्त नारी का आलिङ्गन।
14. कवि पण्डित होना – अष्टवर्षीया कुमारी कन्या की सन्तुष्टि और उससे पुस्तक लाभ, अष्टवर्षीया कन्या द्वारा विद्यादान, मार्ग में पुस्तक प्राप्ति, ब्राह्मण द्वारा मन्त्र प्राप्ति, ब्राह्मणों का आशीर्वाद प्राप्त होना।
15. मन्त्र सिद्धि – शिलामयी प्रतिमा का दर्शन।
16. सुख – श्वेत वस्त्र से युक्त स्त्री का आलिङ्गन।
17. वैष्णव होना – ब्राह्मण का दास बनने का आग्रह।[17]
18. बुद्धि – प्रज्वलित अग्नि देखना।

**प्रतीक**

स्वप्न में ब्राह्मण देवता (विष्णु और शिव) का एवं ब्राह्मणी देवकन्या (लक्ष्मी और पार्वती) का प्रतीक है। श्वेत स्त्री देवमाता, सावित्री, गङ्गा अथवा सरस्वती का, गोप–बालिका–राधा का और बालक, बाल गोपाल का प्रतीक है।[18]

दुःस्वप्न : दुःस्वप्न को पाप का बीज माना गया है। वह केवल विघ्नकारक ही होता है। 'मत्स्यपुराण' एवं 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' में सुस्वप्न के समान दुःस्वप्नों की भी पृथक् सूची है, जिनसे बहुधा भविष्य में मृत्यु शोक, विपत्ति, धनहानि, रोग आदि प्राप्त होने की सम्भावना सूचित होती है। फलक्रम से दुःस्वप्नों का विश्लेषण[19] अधोलिखित है कृ

1. भावीविपत्ति सूचक स्वप्न – हर्षातिरेक के अट्टाहास, विवाह एवम् मनोनुकूल नाच–गान, कान में लगे हुए अढ़हुल, अशोक और करवीर के पुष्प, रुष्ट ब्राह्मण, मृग का मृतक शिशु, नरमुण्ड और हड्डियों की माला, फूटा बर्तन, घाव, शूद्र, गलत्कुष्टी रोगी, लालवस्त्र, जटाधारी, सूअर, भैंसा, गदहा, अन्धकार, मृत, भयङ्कर जीव, योनिचिह्न, रथ, घर, पर्वत, वृक्ष, गौ, हाथी और घोड़े को आकाश से नीचे गिरते देखना, ज्योतिषी, ब्राह्मण, ब्राह्मणी या गुरु का रुष्ट होकर शाप देना, विपत्तिसूचक स्वप्न हैं।
2. मृत्युसूचक स्वप्न – तेल से पोता हुआ गदहे, ऊँट और भैंसे पर सवार होकर दक्षिण दिशा को जाना, काला वस्त्र पहने काले रङ्ग की विधवा स्त्री का हँसना और गाना, देवगणों का नाचना, गाना, हँसना, ताल ठोकना और दौड़ना, काली माता, चन्दन तथा काले वस्त्र धारण करने वाली स्त्री के साथ आलिङ्गन, गदहे और ऊँट जूते हुए रथ पर एकाकी सवार होना और उसपर बैठा हुआ ही जाग जाना, गिरे हुए नख और केश, बुझे हुए अङ्गार, भस्मपूर्ण चिता, कुवेषधारी मलेच्छ और पाशधारी भयङ्कर यमदूत, काला फूल, काले फूलों की माला, शस्त्रास्त्रधारी सेना, विकृत आकार की मलेच्छ स्त्री, प्राणरहित मुद्रा, घायल अथवा विना सिर का धड़, मुण्डित सिर वाले प्राणी का नाच, मृतक का आलिङ्गन, भस्म और अङ्गारयुक्त गड्ढों में, क्षारकुण्डों में तथा धूलियों पर ऊँचे से नीचे की ओर अपने को गिरते देखना, मलेच्छ और यमदूतों द्वारा पाशबद्ध होकर स्वयं को जाते देखना, शरीर पर शत्रुदल, कौए, मुर्गे और भालुओं को गिरते देखना, आश्रम का भस्म होना।
3. भावी शोक–सूचक – नंगी, काली, नककटी, शूद्र की विधवा स्त्री तथा ताल का फल।
4. दुःख सूचक – जंगली फूल, लालफूल, पुष्पित पलाश वृक्ष, कपाश और श्वेत वस्त्र, श्मशान, सूखा काष्ठ, तृण, लौह, शमीवृक्ष, काला घोडा, ब्राह्मण, ब्राह्मणी, छोटी कन्या और बालक का विलाप, वाद्य, नाच–गान, गवैया, लालवस्त्र और मृदङ्ग–वादन, गिरता हुआ वृक्ष, शिलावृष्टि, भूसी, छूरा, लाल चिंगारी, भस्मवृष्टि, गृह या ग्रहपात, पर्वत, धूमकेतु, टूटे कन्धे का मनुष्य।
5. धनहानि और पीड़ा – दाँतों का तोड़ जाना और गिरना, बाल गिरना।
6. व्याधि ग्रस्तता – लाल वस्त्र, लाल माला और चन्दन धारण करनेवाली स्त्री से आलिङ्गन, सेना, गिरगिट, कौआ, भालू, वानर, नीलगाय, पीव और शरीर का मल।
7. रोगी होना – भैंसे, भालू, ऊँट, सूअर और गदहों को क्रुद्ध होकर अपने ऊपर आक्रमण करते देखना।
8. दश दिनों तक जीवन (अल्पायु) – वात, मल, मूत्र, वैद्य, रूपा और सुवर्ण दर्शन।
9. पीड़ा – हवि, दूध, मधु, तक्र और गुड़ से अपने को सरोवार देखना।
10. भाई की मृत्यु – स्वप्न में मत्स्य आदि धारण करना।
11. लक्ष्मी और पृथिवी का नष्ट होना – घर से भयभीत गौ को बछड़े सहित जाते देखना।
12. राजकुल से भय – सींगधारी अथवा दंष्ट्रधारी जीव टाटा बालक और मनुष्यों से उपद्रव पाना।
13. विरह होना – क्रोधी ब्राह्मण द्वारा छत्रहरण, कज्जलाकार गम्भीर सागर में धकेला जाना, जलप्रवाह में जल–जन्तुओं से भय–प्रयुक्त आर्तनाद, चन्द्रमण्डल और सूर्यमण्डल का खण्ड–खण्ड होकर भूमि पर पतन, एक ही काल में चन्द्र–सूर्य–ग्रहण, ब्राह्मण द्वारा अमृत–कलश को फोड़ना, महारुष्ट ब्राह्मण द्वारा नेत्रगत पुरुष को पकड़ना, हाथ से क्रीडाकमल का गिरना, हाथ से दर्पण का गिरकर टूक–टूक होना, वक्ष–स्थल से हार का गिरना, भवन में निर्मित कृत्रिम पुत्तलिकाओं का नाचना, हँसना, गाना और रोना, आकाश में काला चक्र का घूमना, प्रियजन का शरीर से निकलकर प्रस्थान की आज्ञा मांगना, काले वस्त्र पहने काली प्रतिमा द्वारा आलिङ्गन।[20]

## दुःस्वप्न शान्ति

ब्रह्मवैवर्तपुराण में दुःस्वप्नों की शान्ति के लिए अधोलिखित निर्देश प्राप्त होते हैं –

1. लाल चन्दन की लकड़ी को घी में डुबाकर एक सहस्र गायत्री मन्त्र द्वारा अग्नि में हवन।
2. भक्तिपूर्वक एक हजार भगवान मधुसूदन नाम का जप।
3. पवित्र होकर पूर्वाभिमुख अच्युत, केशव, विष्णु, हरि, सत्य, जनार्दन, हंस तथा नारायण कृ इन आठ भगवन्नामों का दशावतार जपना।[21]
4. स्नानोत्तर 'ॐ नमः' के साथ शिव, दुर्गा, गणपति, कार्तिकेय, दिनेश्वर, धर्म, गङ्गा, तुलसी, राधा, लक्ष्मी तथा सरस्वती – इन मङ्गल नामों का जप।[22]
5. सत्रह अक्षरों के कल्पवृक्ष तुल्य श्री महामाया के मन्त्र को पवित्रतापूर्वक दस बार जप,[23] इनके अतिरिक्त –
6. मृत्युञ्जय मन्त्र[24] के एक लाख जप से शतायु हो जाने का उल्लेख है।

मत्स्यपुराण ने भगवत्पूजन, हवन और स्तुति के बाद 'नागेन्द्र–मोक्ष' का श्रवण करने से दुःस्वप्न का नाश होना बताया है[25] और ब्रह्मवैवर्तपुराण में विष्णुकृत 'गणेश स्तोत्र' को दुःस्वप्ननाशक कहा है।[26]

प्रतिनियोजित स्वप्न

स्वप्न विज्ञान की विशेषता के परिचायक ब्रह्मवैवर्तपुराण की दो प्रतिनियोजित कथाएँ हैं। प्रथम तो वाण–पुत्री उषा और भगवान श्रीकृष्ण के पौत्र (प्रद्युम्न–पुत्र) अनिरुद्ध का प्रतिनियोजित पृथक्–पृथक् स्वप्न दर्शन एवं परस्पर सामयिक वार्तालाप[27] और दूसरी गोकुल से आये हुए उद्धव की शान्ति के लिए भगवान श्रीकृष्ण की स्वप्न में गोकुल यात्रा और राधा से मिलन।[28]

इनसे तत्कालीन सामाजिक समस्या के समाधान में योग, मन्त्र–तन्त्र, स्तोत्र, कवच के अतिरिक्त स्वप्न योग का भी स्थान स्पष्ट परिलक्षित है।

निद्रा केवल शारीरिक विश्राम ही नहीं वरन् कुछ और भी है। स्वप्न मात्र मनोवैज्ञानिक हलचल ही नहीं वरन् इसके अतिरिक्त भी उनमें कुछ अन्य तथ्य विद्यमान हैं।[29]

स्वप्नाध्याय श्रवण से गङ्गा स्नान का फल मिलना वर्णित है।[30]

**सन्दर्भ सूची –**


[1] भगवती देवी शर्मा, अखण्ड ज्योति : आत्म चेतना की सांकेतिक भाषा स्वप्न से (अक्टूबर 1972, मथुरा, पृष्ठ 21–22)

[2] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्ण जन्मखण्ड 77/2
वेदेषु सामवेदश्च प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
तथैव कण्वशाखायां पुण्यकाण्डे मनोहरे॥
स व्यक्तो यश्च दुःस्वप्नः शश्वत्पुण्यफलप्रदे॥

[3] प्रश्नोपनिषद् : प्रश्न 4.2.5, सूर्य के पौत्र गार्ग्य के पूछने पर (कौन देव स्वप्नों को देखता है?) पिप्पलाद मुनि ने सर्वेन्द्रिय रूप मनोदेव को स्वप्न में विभूति द्रष्टा बताया, जिसमें सभी इन्द्रियाँ अस्तगामी सूर्य–किरणों के समान एकीभाव को प्राप्त हो जाती हैं तब वह (मन) दृष्ट, अदृष्ट, श्रुत, अश्रुत, अनुभूत, अननुभूत और सत्, असत् सभी पदार्थों को, स्वयं सर्वरूप होकर देखता है। इससे भूत, भविष्य और वर्त्तमान – तीनों स्वप्नगम्य होना प्रमाणित होता है – अत्रैष देवरू स्वप्ने महिमानमनुभवति। यद् दृष्टमनुपश्यति श्रुतं श्रुतमेवार्थमनुशृणोति। देशदिगन्तरैश्च प्रत्यनुभूतं पुनः पुनः प्रत्यनुभवति। दृष्टं चादृष्टं च श्रुतं चाश्रुतं चानुभूतं चाननुभूतं च सच्चासच्च सर्वं पश्यति सर्वः पश्यति।

[4] वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड 27.9.39 – त्रिजटा का स्वप्न दर्शन।

[5] व्यास, मत्स्यपुराण 142/5–35 मनु–मत्स्य संवाद।

[6] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण (स्वप्नाध्याय)
प्रकृतिखण्ड 17/53, गणपति खण्ड 27/58, 33/9–29, 34/11–27–40
श्रीकृष्णजन्मखण्ड 63/4–27, 66, 5/20, 70/3–19, 76/78, 82, 77/5–13, 7/ध70–80, 77/14–75, 82/2, 41, 52/57, 98/41,42, 44/3

[7] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण (स्वप्नाध्याय)
श्रीकृष्णजन्मखण्ड 77/7–8
दिने मनसि यद् दृष्टं तत्सर्वं च लभेद् ध्रुवम्।
चिन्ताव्याधि–समायुक्तो नरः स्वप्नं च पश्यति॥
गणपति 33/34 न चिन्तितं यन्मनसा वायुपित्तकफं विना॥

[8] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण
श्रीकृष्णजन्म खण्ड 77/5–7
स्वप्नस्तु प्रथमे यामे संवत्सरफलप्रदः।
द्वितीये चाष्टभिमांसैस्त्रिभिर्मासैस्तृतीयके॥
चतुर्थे चार्धमासेन स्वप्नः स्वात्मफलप्रदः।
दशाहे फलदः स्वप्नोऽप्यरुणोदयदर्शने॥
प्रातः स्वप्नश्च फलदस्तत्क्षणं यदि बोधितः।

[9] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण
श्रीकृष्णजन्मखण्ड 77/10
दृष्ट्वा स्वप्नं च निद्रालुर्यदि निद्रां प्रयाति च।
विमूढ़ो वक्ति चेद्रात्रौ न लभेत्स्वप्नर्ष फलम्॥

[10] व्यास, मत्स्यपुराण 142/18

[11] व्यास, मत्स्यपुराण 142/19
एकस्यां यदि वा रात्रौ शुभं वा यदि वाऽशुभम्।
पश्चाद् दृष्टस्तु यस्तत्र तस्य पाकं विनिर्दिशेत्॥

[12] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण
श्रीकृष्णजन्मखण्ड 77/11–12
उक्त्वा काश्यपगोत्रं च विपत्तिं लभते ध्रुवम्।
दुर्गते दुर्गति याति नीचे व्याधिं प्रयाति च॥
शत्रौ भयं च लभते मूर्खे च कलहं लभे।
कामिन्यां धनहानिः स्यात् रात्रौ चोरभयं भवेत्॥
श्रीकृष्णजन्मखण्ड 82/56
काश्यपे दुर्गते नीचे देवब्राह्मणनिन्दके।
मूर्खे चौवानभिज्ञे च न च स्वप्नं प्रकाशयेत्॥

[13] वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड 27/9–20

[14] वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड 27/21–37

[15] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 77/37

[16] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 77/14–35

[17] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 70/7–19

[18] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 77/39, 74–75

[19] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 82/2–41 (दुःस्वप्न विश्लेषण संख्या 1 से 13 तक)

[20] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 66/5–20

[21] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 82/44–45
अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्दनम्।
हंसं नारायणं चौव ह्येतन्नामाष्टकं शुभम्॥
शुचिः पूर्वमुखः प्राज्ञो दशकृत्वश्च यो जपेत्।
निष्पापोऽपि भवेत्सोऽपि दुःस्वप्नः शुभवान्भवेत्॥

[22] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 82/50–51

[23] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 82/53
ॐ ह्रीं क्लीं दुर्गतिनाशिन्यै महामायायै स्वाहा।

[24] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 82/55
ॐ नमो मृत्युञ्जयाय स्वाहा।

[25] व्यास, मत्स्यपुराण 182/17

[26] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, गणपतिखण्ड 13/42–55
तेन दृष्टं च दुःस्वप्नं सुस्वप्नमुपजायते।

[27] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 1/14, 3/37

[28] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 98/41–42

[29] अखण्ड ज्योति, अक्टूबर 1972, मथुरा

[30] व्यास, ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्मखण्ड 77/4
स्वप्नाध्यायं नरः श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत्॥